

class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

Written by Raushan Kumar
R.B.G.R college Mahavijaypur

① विद्यापति के काव्य में शृंगारिकता पर प्रकाश डालते उत्तर

हिन्दी साहित्य के आदिकालीन कवियों में विद्यापति का सर्वोच्च स्थान है। इनका जन्म बिहार के दरभंगा जिले में हुआ था। इन्हें 'मैथिल कोकिल', 'अमिन्व जयदेव', कवि शेखर आदि कई नामों से पुकारा जाता है। इनके द्वारा रचित निम्न कृतियाँ हैं - कुछ कृतियाँ इस प्रकार हैं - 'कृतिलता', 'कृति पताका', 'भू परिभ्रमा' आदि।

जहाँ तक विद्यापति के काव्यगत विशेषता की बात करें, तो इनके काव्य में यत्न-तन् शृंगारिकता की झलक मिलती है। इनकी काव्यगत विशेषताओं का देखते हुए कुछ आलोचकों ने इन्हें भुक्त कवि माना है। तो कुछ ने इन्हें भुमा-रिक्त कवि माना है। अचार्य राम चंद्र शुक्ल ने इन्हें शृंगारिक कवि मानते हुए लिखा है - 'आध्यात्मिक रस के चरम आजकल बहुत सरल हो गये हैं। इसे पहचानने लोग सरदास के शृंगारिक पदों की भी आध्यात्मिक कदमें लगें हैं।' इनकी रचना 'कृतिलता' में जीवन की वैश्या का वर्णन किया गया है।

9 विद्यापति के अधिकतर पद मृंगार
 है। इसमें नायिका और नायक
 शब्दा-कृष्ण हैं। इन पदों की रचना
 जयदेव के गीतकाव्य के अनुकरण
 पर ही शायद की गयी है। विद्यापति
 इनका माधुर्य अपूर्ण है। शिव
 भी है। इन्होंने इन पदों की
 रचना मृंगार काव्य की दृष्टि से
 की है भक्त के रूप में नहीं
 विद्यापति को कृष्णभक्त की परंपरा
 में न समझना चाहिए।
 इनकी पदावली है। इसमें नायक
 एवं नायिका का निश्चय प्रेम
 देखते ही बनता है। पदावली
 में खास बात यह है कि इसमें
 नायिका का विरह-वर्णन अपूर्ण
 है। एक उदाहरण प्रस्तुत है।
 सखि है हमर दुखक नहीं और
 इ मर बादर माह आदर
 सुना मंदिर मोर। ग
 अर्थात्, नायिका के दुख का
 कहीं और आँसू नहीं है। आदर
 का महीना है। आकाश बादलों
 ढका है। ठंढका ठंढका रहा है।
 बिजली चमक रही है पर
 बिजवना यह है कि वह घर
 में अकेली है। उसका प्रति उसी
 होकर चला गया है। बेचारी का
 दुख-पद सुनने वाला कोई नहीं
 है। इतना ही नहीं उसे इस
 बात का भी उसे कि लोग
 उसकी बातों को जरूर ही न समझते।